डॉ. केविन ई. फ्रेडरिक, वाल्डेन्सियन, व्याख्यान 8, सुधार आंदोलन में शामिल होना, एक सतत गवाही

© 2024 केविन फ्रेडरिक और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र 8 है, सुधार आंदोलन में शामिल होना, एक सतत गवाही।

हमारे आज के उपदेश का शीर्षक है, एक सतत गवाही, और यह वाल्डेन्सियन के विषय को देखता है क्योंकि वे जिनेवा, स्विट्जरलैंड से सुधारवादी परंपरा के साथ विलीन हो गए।

लेकिन इस अध्ययन के आधार के रूप में, आइए हम सबसे पहले सुसमाचारों या पवित्रशास्त्रों की ओर मुड़ें, और विशेष रूप से थिस्सलुनीके के लोगों को पौलुस द्वारा लिखे गए पत्र और दूसरे पत्र को देखें, जो पहले अध्याय और पहली आयत से शुरू होता है। पौलुस, सिलवानुस और तीमुथियुस की ओर से थिस्सलुनीकियों की कलीसिया को, हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह में, हमारे पिता परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह की ओर से तुम्हें अनुग्रह और शान्ति मिलती रहे। हे भाइयो और बहनों, हमें तुम्हारे लिए हमेशा परमेश्वर का धन्यवाद करना चाहिए, जैसा कि उचित है, क्योंकि तुम्हारा विश्वास बहुत बढ़ता जा रहा है, और तुम में से हर एक का एक दूसरे के प्रति प्रेम बढ़ता जा रहा है।

इसलिए हम आप परमेश्वर की कलीसियाओं में तुम्हारे विषय में घमण्ड करते हैं, कि तुम सब उपद्रवों और क्लेशों में जो तुम सहते हो, धीरज और विश्वास रखते हो। यह परमेश्वर के सच्चे न्याय का प्रमाण है, और तुम्हें परमेश्वर के राज्य के योग्य ठहराता है, जिसके लिये तुम दुख भी उठाते हो। क्योंकि परमेश्वर को यह उचित लगता है कि जो तुम्हें क्लेश पहुँचाते हैं, उन्हें क्लेश देकर बदला दे, और क्लेशितों के साथ-साथ हमें भी चैन दे, जब प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्वर्ग से प्रगट होगा, और उन से जो परमेश्वर को नहीं पहचानते, और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते, पलटा लेगा।

ये लोग अनन्त विनाश का दण्ड भोगेंगे, और प्रभु के साम्हने से अलग होकर उसकी सामर्थ्य की महिमा से दूर रहेंगे, जब वह अपने पवित्र लोगों के द्वारा महिमा पाने के लिये आएगा, और उस दिन सब विश्वासियों के बीच आश्चर्य का कारण होगा, क्योंकि हमारी गवाही पर तुम ने विश्वास किया है। इसी लिये हम सदा तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं, कि हमारा परमेश्वर तुम्हें अपने बुलावे के योग्य समझे, और अपनी सामर्थ से हर एक अच्छे संकल्प और विश्वास के काम को पूरा करे कि हमारे प्रभु यीशु का नाम तुम में महिमा पाए, और तुम उसमें, परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के अनुग्रह के अनुसार। यह प्रभु का वचन है।

भगवान का शुक्र है। विलियम फॉल्कनर 20वीं सदी के एक बेहतरीन दक्षिणी लेखक हैं। अपनी कहानियों में, वे युद्ध-पूर्व दक्षिण की पीड़ा और दक्षिणी पहचान पर इसके प्रभाव को गहराई से समझते हैं क्योंकि वे श्वेत, अश्वेत और मूल अमेरिकी लोगों की कई पीढ़ियों की खोज करते हैं।

अपने उपन्यास रेक्विम फॉर ए नन में फॉल्कनर ने सटीक और वाक्पटुता से लिखा है कि अतीत कभी नहीं मरता; यह अतीत भी नहीं है। ये शब्द आज भी उतने ही सच हैं जितने 65 साल पहले फॉल्कनर ने लिखे थे, खास तौर पर आज जब हम रिफॉर्मेशन संडे मनाते हैं। थेसालोनिका के ईसाई समुदाय को लिखे पत्र में प्रेरित पौलुस ने उन्हें एक वफादार और स्थायी समुदाय के रूप में वर्णित किया है, भले ही वे उत्पीड़न के एक महत्वपूर्ण खतरे का सामना करने में दृढ़ रहे।

पौलुस उन्हें यह समझने में मदद करने के लिए लिख रहा था कि आस्थावान लोगों के रूप में उन्हें अपने कष्टों की व्याख्या कैसे करनी चाहिए। लेकिन पौलुस यह भी बताने की कोशिश कर रहा था कि कैसे परमेश्वर न केवल उन्हें उनके कष्टों में सांत्वना प्रदान करेगा, बल्कि पौलुस ने उन्हें बताया कि परमेश्वर उन लोगों के विरुद्ध प्रतिशोध भी करेगा जो आस्थावान समुदाय को इस तरह से कष्ट पहुँचा रहे हैं। वाल्डेन्सियन के 850 साल के इतिहास में उत्पीड़न भी एक प्रमुख विषय है।

वाल्डेन्सियन प्रेस्बिटेरियन के रूप में अपने अतीत से सीखते हुए, हम वर्तमान में अपनी पहचान बनाते हैं और अपने दिन और समय में सेवक नेताओं के रूप में अपनी कॉल को समझते हैं। इस सुधार रविवार को, कुछ महत्वपूर्ण ऐतिहासिक और धार्मिक समानताएँ हैं जिन्हें हमें वाल्डेन्सियन और प्रेस्बिटेरियन के रूप में तलाशना चाहिए, क्योंकि हम ईसाई धर्म की सुधारवादी परंपरा और इस मण्डली में एक साथ विवाहित हैं। दो प्रमुख इतिहासकार जिन्होंने वाल्डेन्सियन इतिहास के बारे में विस्तार से लिखा है, वे हैं इवान कैमरून और गेब्रियल ओडिसियो ।

उन्होंने 16वीं शताब्दी में सुधार की शुरुआत और वाल्डेन्सियन पादरियों, नेताओं जिन्हें वे बारबास या अंकल कहते थे, के 1532 में सुधार में शामिल होने के निर्णय को वाल्डेन्सियन आंदोलन के अंत का संकेत माना है। उनका तर्क 1532 में वाल्डेन्सियन बारबा की उस धर्मसभा की बैठक में लिए गए निर्णय पर आधारित है जिसमें सुधारवादी आंदोलन में शामिल होने के लिए धार्मिक समुदाय के रूप में कई प्रथाओं और संगठनों को त्यागने का निर्णय लिया गया था। उस समय उन्होंने अपने प्राचीन अतीत से जिन विशेषताओं को त्याग दिया उनमें निम्नलिखित शामिल थे:

उनके भ्रमणशील उपदेश का अभ्यास बारबा द्वारा किया जाता था, जो जोड़े में यात्रा करते थे, लोगों की भाषा में सुसमाचार का अनुवाद, व्याख्या और प्रचार करते थे। बारबा की गरीबी और ब्रह्मचर्य की शपथ लेने की प्रथा। शास्त्र की शाब्दिक व्याख्या का उनका पालन।

सदस्यों के घरों में उनकी गुप्त सभाएँ। शपथ-ग्रहण, मृत्युदंड और सात रोमन कैथोलिक संस्कारों में उनके विश्वास जैसे विभिन्न मामलों पर उनके धार्मिक दृष्टिकोण। प्रत्येक वाल्डेन्सियन अनुयायी द्वारा कैथोलिक पादरी के बजाय बारबास के समक्ष अपने पापों को स्वीकार करने की उनकी प्रथा।

सुधार-पूर्व की इन सभी विशेषताओं ने वाल्डेन्सियन को ईसाइयों के एक ऐसे समुदाय के रूप में परिभाषित किया जो विश्वासों की एक अच्छी तरह से विकसित सैद्धांतिक प्रणाली के पालन की तुलना में मंत्रालय के अभ्यास पर अधिक केंद्रित था। लेकिन 16वीं शताब्दी में स्विट्जरलैंड के सुधारित चर्च के साथ खुद को जोड़ते हुए, 1532 में चैनफोरन में वाल्डेन्सियन बारबास के बहुमत द्वारा इन परिभाषित विशेषताओं में से एक को छोड़कर सभी को त्याग दिया गया और चर्च होने

के अर्थ के सुधारित संगठनात्मक ढांचे के साथ सुधारित सिद्धांत के एक व्यवस्थित रूप के पालन द्वारा प्रतिस्थापित किया गया। सुधार में शामिल होने के बाद जो एक विशेषता जारी रही, वह थी लोगों की भाषा में सुसमाचार का अनुवाद, व्याख्या और उद्घोषणा।

इसके विपरीत, नया सुधारित वाल्डेन्सियन चर्च निम्नलिखित अवधारणाओं पर बनाया गया था। पूजा करने वाले समुदाय निश्चित चर्च भवनों में एकत्रित होते हैं। एक घुमंतू पादरी के बजाय विशेष समुदायों को स्थानीय रूप से स्थापित पादरी नियुक्त करना।

प्रत्येक मण्डली से शासक बुजुर्गों का चुनाव करना जो स्थानीय चर्च और उसके मंत्रालय के बारे में निर्णय लेते थे। पवित्र शास्त्रों की शाब्दिक व्याख्या पर विशेष ध्यान देना छोड़ देना और पुराने और नए नियम के दोनों अंशों की व्याख्या यीशु मसीह के माध्यम से ईश्वर की गवाही के लेंस के माध्यम से और साहित्यिक और ऐतिहासिक आलोचनाओं के अन्य अधिक जटिल रूपों के माध्यम से करना जो सुधार के दौरान विकसित होने लगे। हालाँकि वाल्डेन्सियन बारबास के बहुमत ने 1532 में सुधार में शामिल होने के पक्ष में मतदान किया था, लेकिन एक बड़ा अल्पसंख्यक था, जिसमें से ज़्यादातर पुराने बारबास थे जिन्होंने स्विस सुधारकों के साथ जुड़ने के लिए मतदान का विरोध किया था।

चैनफोरन के तुरंत बाद के वर्षों में , जब बारबा ने अपने अनुयायियों के साथ अपने निर्णय की खबर साझा करना शुरू किया, तो उन्हें अपने समुदायों के भीतर इन क्रांतिकारी परिवर्तनों के लिए कठोर विरोध का सामना करना पड़ा। वाल्डेन्सियन लोगों की पहचान 350 वर्षों तक उनके ब्रह्मचारी नेताओं के घुमंतू नेतृत्व द्वारा गहराई से परिभाषित की गई थी, और वे उन क्रांतिकारी परिवर्तनों के लिए खुले नहीं थे जिन्हें बारबा ने अपनाया था। वाल्डेन्सियन लोगों को सुधार धर्मशास्त्र और कलीसियाशास्त्र को अपनाने में अधिकांश सदस्यों को दशकों लग गए।

प्रलेगिगु गांव में पहली वाल्डेंसियन चर्च की इमारत बनाई गई थी , और 1560 के दशक तक चर्चों की सदस्यता को शिक्षित करने के लिए सुधार कैटेचेटिकल अध्ययन शुरू नहीं किए गए थे। स्पष्ट रूप से, अभ्यास और विश्वास में एक क्रांतिकारी बदलाव था जो वाल्डेंसियन वंश को रोमन कैथोलिक चर्च के एक अद्वितीय विकल्प से हमेशा के लिए बदल देगा जो सुधार चर्च के सिद्धांतों और प्रथाओं को दर्शाता है। एक धार्मिक और चर्च के दृष्टिकोण से, वे गुण जो सुधार से पहले वाल्डेंसियन वंश को इतना अद्वितीय बनाते थे, अब अस्तित्व में नहीं रहे।

अर्दिसियो दोनों से सहमत हूँ कि ईसाई धर्म को सुधार-पूर्व वाल्डेन्सियन द्वारा दिया गया अद्वितीय योगदान समाप्त हो गया था। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है कि अद्वितीय वाल्डेन्सियन गवाही 1532 में समाप्त हो गई थी। मेरा मानना है कि उनके द्वारा सामना किए गए उत्पीड़न ने वाल्डेन्सियन को अन्य सुधार चर्च समूहों से अलग तरीके से परिभाषित करना जारी रखा।

यह विश्वास कि सुधार में शामिल होने के बाद वाल्डेंसियन गवाहों का अस्तित्व समाप्त हो गया, काउंटर-रिफॉर्मेशन के दौरान रोमन कैथोलिक चर्च द्वारा वाल्डेंसियनों पर किए जा रहे उत्पीड़न की भूमिका पर विचार करने में विफल रहता है, जो फ्रांस के मारेंडल में 1540 के दशक की शुरुआत में शुरू हुआ था और 18वीं सदी की शुरुआत तक इटली के कैलाब्रिया में जारी रहा। पूरे

यूरोप में, कैथोलिक काउंटर-रिफॉर्मेशन का प्रभाव अक्सर किसी भी अन्य प्रोटेस्टेंट समूह की तुलना में वाल्डेंसियन समुदायों पर अधिक केंद्रित था। पूरे काउंटर-रिफॉर्मेशन के दौरान, कोटियन आल्प्स में स्थित वाल्डेंसियन सबसे संगठित और दृढ़ वाल्डेंसियन गवाह बने रहे क्योंकि उन्हें उत्पीड़न की लहर के बाद लहर का सामना करना पड़ा।

शक्ति और दृढ़ता के स्रोत के रूप में, वे पीछे मुड़कर देखेंगे और अपने पूर्वजों की बहुत पहले की वफादार गवाही को याद करेंगे, जो बुराई के सामने ईश्वर के वफादार अवशेष के रूप में उनकी बुलाहट की धार्मिकता और ईमानदारी पर विश्वास करते हैं। 17वीं शताब्दी में फ्रांसीसी और सवॉयर्ड सैनिकों के सहयोग से रोमन चर्च द्वारा उनके पहाड़ी इलाकों में उन्हें नष्ट करने के लिए बार-बार और सुव्यवस्थित हमलों के बावजूद, वे कभी भी पूरी तरह से नष्ट नहीं हुए। कई कारकों ने उनके जीवित रहने में मदद की, जिसमें वाल्डेन्सियन मातृभूमि की दूरस्थता, आल्प्स की ऊंची पहाड़ियों में भौगोलिक रूप से उनके रक्षात्मक लाभ, उनकी घरेलू गुरिल्ला युद्ध रणनीति और भविष्य में उनका मार्गदर्शन करने के लिए उनके साथ ईश्वर की उपस्थिति में उनका विश्वास शामिल है।

इन तत्वों ने मिलकर यूरोप की सबसे शक्तिशाली सेनाओं के लिए भी उन्हें पूरी तरह से मिटाना लगभग असंभव बना दिया। उनके आवागमन को प्रतिबंधित करने वाले बार-बार के आदेशों ने सैकड़ों वर्षों तक एक समुदाय के रूप में उनके अलगाव को मजबूत किया और कुछ वाल्डेन्सियन को छोड़कर सभी के लिए उच्च शिक्षा तक पहुँच की क्षमता को सीमित कर दिया। इसे वाल्डेन्सियन के यहूदी बस्ती के रूप में जाना जाता है और 19वीं शताब्दी के मध्य तक वास्तव में इसमें कोई बदलाव नहीं आया।

सदियों के उत्पीड़न और अलगाव ने उन्हें अपने विश्वास की गुप्त अभिव्यक्ति करने के लिए मजबूर कर दिया, जिससे उन्हें पकड़े जाने और प्रताड़ित किए जाने के डर से छिपने और गुप्त रूप से पूजा करने के लिए मजबूर होना पड़ा। इस निरंतर खतरे ने उन्हें बाहरी लोगों के प्रति बहुत संदिग्ध बना दिया, और सदियों से, वे अधिक से अधिक आंतरिक रूप से केंद्रित होते गए। सकारात्मक रूप से कहा जाए तो, इस अलगाव का प्रभाव विश्वासियों के एक बहुत ही घनिष्ठ, एकीकृत और आत्मनिर्भर समुदाय का निर्माण करने में हुआ, जो अपने विश्वास और अपने रीति-रिवाजों से बहुत दृढ़ता से जुड़े रहे।

इस बात का कोई सराहनीय प्रमाण नहीं है कि 1532 में सुधार आंदोलन में शामिल होने के बाद बारबास ने पादरी बनकर अपनी सेवा जारी रखी। यह निर्धारित करने के लिए कोई दस्तावेज नहीं मिला है कि भौगोलिक रूप से परिभाषित मण्डलियों की सेवा करने के लिए बारबास को फिर से नियुक्त किया गया था या नहीं। 1540 के दशक में स्विट्जरलैंड में सुधारित चर्च द्वारा वाल्डेन्सियन को फिर से आकार देने के लिए किए गए एक मजबूत प्रयास का प्रभाव अधिक स्पष्ट है, जिसने वाल्डेन्सियन लोगों का नेतृत्व करने के लिए जिनेवा में सेमिनरी में प्रशिक्षित गैर-वाल्डेनियन पादरियों की महत्वपूर्ण संख्या को भेजना शुरू किया।

शुरुआती सुधारकों ने वाल्डेन्सियन को सच्चा चर्च माना जिसने सुधार आंदोलन की जड़ों में अपनी प्रेरितिक शुद्धता बनाए रखी। गेब्रियल ओडिसियो के अनुसार , 30 वर्षों की अवधि में, जिनेवा के

सुधारित चर्चों ने कोटियन आल्प्स में अपेक्षाकृत कम संख्या में वाल्डेन्सियन चर्चों में 60 पादरी भेजे, जबकि उसी समय के दौरान, पूरे फ्रांस में प्रोटेस्टेंट मण्डली में कुल 80 पादरी भेजे। प्रयासों की यह एकाग्रता सुधार आंदोलन के नेताओं की नज़र में वाल्डेन्सियन के महत्व को दर्शाती है।

बाद की पीढ़ियों में, वाल्डेन्सियन पुरुषों की बढ़ती संख्या अपने स्वयं के चर्चों में सेवा करने के लिए जिनेवा में प्रशिक्षण लेने गई, लेकिन नेतृत्व में इन परिवर्तनों के बावजूद, एक बात स्थिर रही। वाल्डेन्सियन आस्था समुदाय के उत्पीड़न की लहर के बाद लहर के खिलाफ मजबूत पादरी नेतृत्व प्राथमिक शक्ति है जिसने आंदोलन की सुसंगतता और स्थायित्व को एक साथ रखा। निरंतरता का यह स्रोत पूर्व-सुधार वाल्डेन्सियन तक वापस जाता है और आधुनिक युग तक जारी रहता है।

इसका सबसे प्रमुख उदाहरण वाल्डेन्सियन पादरी हेनरी अर्नाल्ट हैं। 17वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अपने सबसे बुरे दिनों के दौरान, अर्नाल्ट ने 1686 में जिनेवा में अपने निर्वासन के दौरान वाल्डेन्सियन लोगों को संगठित किया, जो एक छोटी लेकिन बेहद प्रभावी लड़ाकू सेना बन गई। अर्नाल्ट ने 1689 में जिनेवा, स्विटजरलैंड से एक अभियान पर 900 निर्वासित लोगों की अपनी छोटी सेना का नेतृत्व किया, ताकि वे अपनी मातृभूमि को पुनः प्राप्त कर सकें, जिसे एक शानदार वापसी के रूप में जाना जाएगा, जिसके परिणामस्वरूप वाल्डेन्सियन फ्रांस और सेवॉय के 20,000 सैनिकों की संयुक्त सेनाओं पर विजय प्राप्त करेंगे।

उनकी सफलता के बावजूद, 10 साल बाद, फ्रांस के राजा ने चिसोन घाटी से 3,000 वाल्डेन्सियन को प्रोटेस्टेंट जर्मनी में निर्वासित कर दिया। अरनॉल्ट ने इन लोगों को एक बार फिर निर्वासन में ले जाया और उनमें से कई लोगों को जर्मनी के डार्मस्टाट-हेस्से क्षेत्र में 10 पड़ोसी समुदायों में बसने में मदद की। इस प्रवास की सफलता और वाल्डेन्सियन धर्म की निरंतरता के लिए अरनॉल्ट का नेतृत्व महत्वपूर्ण था।

अर्नोल्ट जैसे मंत्री अक्सर वाल्डेन्सियन लोगों को भारी उत्पीड़न के बावजूद एक साथ रखने वाले गोंद की तरह काम करते थे। वाल्डेन्सियन लोगों की पहचान और अस्तित्व को सुनिश्चित करने में उनके संगठनात्मक ढांचे की निरंतरता के महत्व को कोई भी बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बता सकता। वार्षिक वाल्डेन्सियन धर्मसभा बैठकें, जिसके दौरान प्रत्येक वाल्डेन्सियन आस्था समुदाय के पादरी चर्च के काम पर चर्चा करने के लिए एकत्र होते थे, एक महत्वपूर्ण कारक थे जिसने उन्हें अपनी पहचान और अपने पूर्व-सुधार पूर्वजों के साथ संबंधों को जीवंत रखने में मदद की।

वाल्डेन्सियन चर्च का संरचनात्मक नेतृत्व 13वीं शताब्दी में ही अस्तित्व में था, जिसकी शुरुआत 1218 में बर्गामो की परिषद से हुई थी, और हर साल धर्मसभा की बैठकों में इसे मजबूत किया जाता था। इसका संगठन निरंतरता के एक मजबूत स्रोत के रूप में कार्य करता है जो सुधारवादी वाल्डेन्सियन गवाह को उसके पूर्व-सुधारवादी जड़ों से जोड़ता है। 16वीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर 17वीं सदी के दौरान काउंटर-रिफॉर्मेशन के दौरान उनके नेताओं ने पुराने नियम के हिब्रू लोगों और नए नियम में खुद को आल्प्स का इज़राइल कहने वाले शुरुआती चर्च के दुखों और निर्वासन के साथ पहचान करने वाले शास्त्रीय समानताओं को नियमित रूप से उठाकर सांत्वना प्राप्त करना शुरू किया।

प्राचीन काल के सताए गए आस्था समुदायों के साथ आत्मीयता का दावा करके आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने से 17वीं शताब्दी के सताए गए वाल्डेन्सियन को एक ऐसी पहचान मिली जो न केवल प्राचीन इज़राइल और शुरुआती चर्च के साथ बल्कि उसी ईश्वर के साथ भी जुड़ी जिसने अपने सताए हुए लोगों को हज़ारों सालों तक प्यार से ऊपर उठाया और उन्हें आगे बढ़ाया। वाल्डेन्सियन को इस आश्वासन में बहुत आध्यात्मिक और नैतिक शक्ति मिली कि वे, ईश्वर के वाचा के लोगों के रूप में, उनके खिलाफ़ किए गए अन्याय पर विजय प्राप्त करेंगे और अपने वफ़ादार गवाहों को ऐसे तरीकों से पूरा करेंगे जिनकी उम्मीद नहीं की जा सकती थी। ईश्वर के वफ़ादार लोगों की पहचान के पीछे यह अंतर्निहित मूल विश्वास 13वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में उत्पीड़न के उदय से लेकर सुधार के माध्यम से आधुनिक युग की सुबह तक पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया गया।

सुधार आंदोलन में शामिल होने के बाद भी आस्थावान लोगों के रूप में वाल्डेन्सियन की पहचान समाप्त नहीं हुई, बल्कि वे हर युग में उत्पीड़न और चुनौतियों का सामना करने के लिए विकसित और अनुकूलित होते रहे। अतीत कभी नहीं मरता। यह अतीत भी नहीं है।

आत्मा की यह दृढ़ता और यीशु मसीह में दृढ़ विश्वास आज सुबह इस मण्डली में वाल्डेन्सियन को सौंप दिया गया है। वाल्डेन्सियन संकल्प, दृढ़ता, धीरज और समुदाय के प्रति दृढ़ प्रतिबद्धता की ताकत ही वह ताकत है जिसने वाल्डेन्सियन के पहले दस परिवारों का साथ दिया और उनका मार्गदर्शन किया, जिन्होंने 29 मई, 1893 को 10,000 एकड़ जमीन के एक दस्तावेज और चुकाने के लिए कर्ज के पहाड़ के साथ एल्डी के उत्तरी कैरोलिना की ट्रेन से कदम रखा। ये वो ताकतें हैं जिन्होंने उन शुरुआती बसने वालों को 40 साल की अवधि के लिए एक संपन्न उद्योग का शहर बनाने और महामंदी के दौरान हजारों क्षेत्रीय नागरिकों के लिए वित्तीय स्थिरता का स्रोत बनाने के लिए प्रेरित किया।

ये वे ताकतें हैं जो आज एक मण्डली में देखी जा सकती हैं जो मसीह और मसीह के लोगों की सेवा करने के लिए अपने समर्पण से चिह्नित है, न केवल हमारी मण्डली के दरवाज़ों के भीतर बल्कि हमारे दरवाज़ों से परे परमेश्वर के लोगों के लिए, चाहे वे निकट हों या दूर। हम अपने विश्वास की विरासत की अखंडता को कैसे बनाए रख सकते हैं? यही वह चुनौती है जिसका हम आज सामना कर रहे हैं। हमें अपने विश्वासों के लिए सताए जाने की उतनी संभावना नहीं है, लेकिन जब हम मसीह के वफादार गवाह के रूप में साहसपूर्वक सेवा करते हैं तो अपनी अच्छी विरासत द्वारा निर्देशित होने की आवश्यकता हमारी निरंतर पुकार बनी रहती है क्योंकि अतीत कभी खत्म नहीं होता।

यह अतीत भी नहीं है। पिता और पवित्र आत्मा के पुत्र के नाम पर। आमीन।

यह डॉ. केविन फ्रेडरिक वाल्डेन्सियन के इतिहास पर अपने शिक्षण में हैं। यह सत्र संख्या आठ है, सुधार आंदोलन में शामिल होना, एक सतत गवाही।